सेवा क्षेत्र

09
अध्याय

भारत की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की महत्ता लगातार बढ़ रही है तथा सकल संवर्द्धन मूल्य और सकल संवर्द्धन मूल्य वृद्धि में इसका हिस्सा 55 प्रतिशत हैं एवं भारत के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अंतर्वाह में दो-तिहाई और कुल निर्यात में 38 प्रतिशत है। सेवा क्षेत्र का हिस्सा अब 33 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में से 15 राज्यों में सकल संवर्द्धन मूल्य 50 प्रतिशत से अधिक है और दिल्ली व चण्ड़ीगढ़ में यह हिस्सा 80 प्रतिशत से अधिक है। हालांकि सकल संवर्द्धन मूल्य वृद्धि से संबंधित आंकड़े, उच्च आवृत्ति संकेतकों और क्षेत्रवार रूझान 2019-20 के दौरान सेवा क्षेत्र की गतिविधि में नरमी की ओर संकेत करते हैं। 2019-20 के दौरान सेवा क्षेत्र को बैंक ऋण, वायु यात्री यातायात व रेल माल यातायात की वृद्धि में नरमी देखी गई है, जबकि विदेशी पर्यटकों के आगमन व बन्दरगाहों यातयात में ढीलापन जारी रहा। उज्जवल पक्ष को देखा जाए तो अप्रैल-सितम्बर 2019 के दौरान सेवा क्षेत्र में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अंतर्वाह में बेहतरी दर्ज की गई, तथा सेवाओं को निर्यातों में संवेग बना रहा। हाल के वर्षों में सेवाओं के निर्यातों का निष्पादन वस्तुओं के निष्पादन से बेहतर रहा है, जिसके कारण विश्व के वाणिज्यिक सेवा निर्यातों में भारत का अंश पिछले दशक में लगातार बढ़ते हुए 2018 में 3.5 प्रतिशत पर पहुंच गया, जो कि वस्तुओं के निर्यातों में भारत के 1.7 प्रतिशत से दुगुना है। भारत के शिक्षा सेवा आयात हाल के वर्षों में तेजी से बढ़कर 2013-14 में 2.3 अरब अमेरिकी डॉलर से 2018-19 में 5.0 अरब अमेरिकी डॉलर पर पहुंच गए। बन्दरगाहों पर जहाज वापसी का समय 2010-11 में 4.67 दिनों से आधा होकर 2018-19 में 2.48 दिन रह गया। भारत ने हाल के वर्षां में, लगभग 5-7 उपग्रह प्रतिवर्ष छोड़े हें, जिसमें 2017 में हुई एक असफलता को छोड़कर अन्य कोई असफलता नहीं रही है।

भारत में सेवा क्षेत्र का प्रदर्शनः एक सिंहावलोकन

सेवा क्षेत्र में भारत का सकल संवर्द्धन मूल्य

9.1 सांख्यिकी और योजना एंव कार्यान्वयन मंत्रालय के सकल मूल्य संवर्द्धन (जी वी ए) के प्रथम अग्रिम अनुमानों के अनुसार, 2019-20 के दौरान सेवाओं के क्षेत्र में (वर्ष दर वर्ष) संवृद्धि में गिरावट जारी रही यह वृद्धि दर 2018-19 में 7.5 प्रतिशत से घटकर 2019-20 में 6.9 प्रतिशत पर पहुंच गई (तालिका 1) उपक्षेत्रवार, 'वित्तीय सेवाओं, रियल एस्टेट और पेशेवर सेवाओं' की वृद्धि दर (वर्ष दर वर्ष) में 2019-20 के दौरान नरमी दर्ज की गई है और 'व्यापार, होटल, परिवहन, संचार और प्रसारण सेवाओं' की वृद्धि पर में 2019-20 में गिरावट जारी रही जिससे इसकी वृद्धि दर 5.9 प्रतिशत पर पहुंच गई। तथापि, 2019-2020 के दौरान 'लोक प्रशासन, रक्षा एवं अन्य सेवाओं' से संबंधित कार्यकलापों में तेजी दर्ज की गई जिससे कारण इनमें 9.1 प्रतिशत की वृद्धि (वर्ष दर वर्ष) हुई। हाल की निम्न वृद्धि दर के बावजूद, सेवा क्षेत्र ने लगातार कृषि और उद्योग क्षेत्र से बेहतर प्रदर्शन किया है तथा कुल सकल संवर्द्धन मूल्य एवं कुल सकल संवर्द्धन मूल्य वृद्धि में इसका अंश लगभग 55 प्रतिशत है।

तालिका 1: भारत के सकल संवर्द्धन मूल्य में सेवा क्षेत्र का प्रदर्शन

क्षेत्र	सकल संवर्द्धन मूल्य में हिस्सा (प्रतिशत)	वृद्धि (प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष)				
					2019-20	
	2019-20 (1st AE)	2017-18 (RE)	2018-19 (PE)	2019-20 (1st AE)	Q1	Q2
कुल सेवाएं	**55.3**	**8.1**	**7.5**	**6.9**	**6.9**	**6.8**
व्यापार होटल, परिवहन, संचार और प्रसारण संबंधी सेवाएं	18.3	7.8	6.9	5.9	7.1	4.8
वित्तीय, रियल एस्टेट और व्यावसायिक सेवाएं	21.3	6.2	7.4	6.4	5.9	5.8
लोक प्रशासन, रक्षा और अन्य सेवाएं	15.6	11.9	8.6	9.1	8.5	11.6

स्रोत: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

टिप्पणी: हिस्सा वर्तमान मूल्य पर है और वृद्धि स्थिर 2011-12 मूल्य पर; RE : संशोधित अनुमान PE; अनंतिम अनुमान; 1 AE : प्रथम अग्रिम अनुमान।

9.2 सेवा क्षेत्र की वृद्धि में उच्च आवृत्ति संकेतकों में भी परिलक्षित होती है, यद्यपि कुछ हालिया आंकड़ों से संकेत मिलता है कि शायद सेवा क्षेत्र के कार्यकलापों (चित्र 1(क) से (घ) में) क्रय प्रबंधन सूचकांक (पीएमआई) 2018-19 के तिमाही-4 व 2019-20 के तिमाही-1 के दौरान नरमी के बाद हाल के महीनों में 50 की सीमा से ऊपर स्थिर हो गया है। (50 से ऊपर इंगित करता है कि सेवा क्षेत्र के कार्यकलापों का विस्तार हो रहा है)। वायु यात्री यातायात में 2018-19 के मध्य से जारी मंदी के बाद में सुधार के संकेत मिलने शुरू हो गए हैं। यहां तक कि रेल भाड़े में भी नवम्बर, 2019 से वृद्धि शुरू हो गई है, जबकि इसमें पिछले कुछ महीनों में गिरावट हो रही थी। इसके विपरीत सेवा क्षेत्र के लिए बैंक ऋण की वृद्धि दर में गिरावट जारी है। सेवा क्षेत्र को बैंक ऋण की वृद्धि दर में वृद्धि नवम्बर 2019 में 4.8 प्रतिशत थी, जब कि एक साल पहले यह 28.1 प्रतिशत थी (तालिका 2)।

चित्र 1(क): सेवाओं का पीएमआई सूचकांक

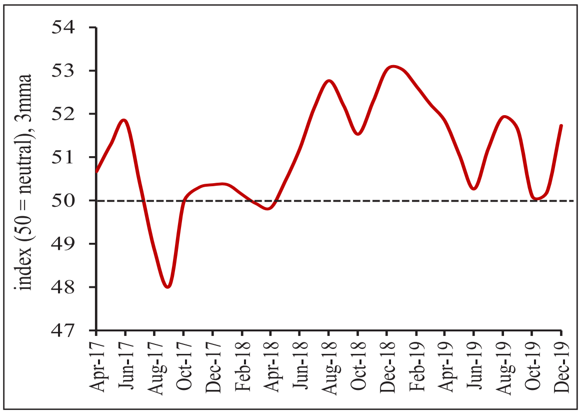

चित्र 1(ख) वायु यात्री यातायात में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

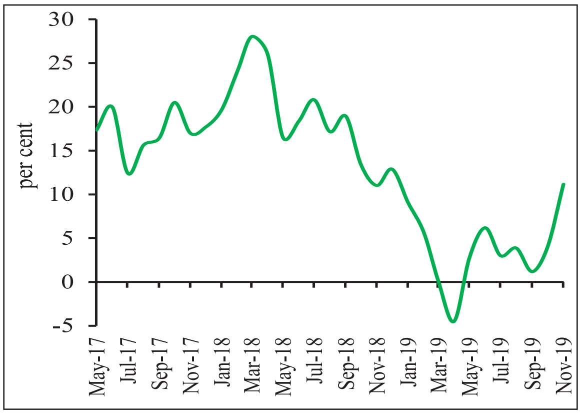

स्रोत: आरबीआई, आईएचएस मार्कट इकोनॉमिक्स, भारतीय रेलवे, नागर विमानन महानिदेशालय।

चित्र 1(ग) : रेल माल यातायात में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

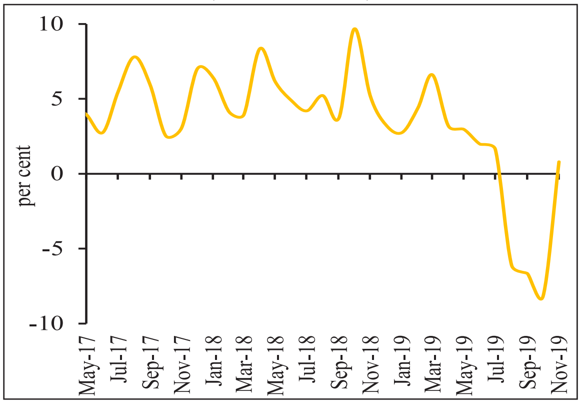

चित्र 1(घ) : सेवा क्षेत्र में बैंक ऋण में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

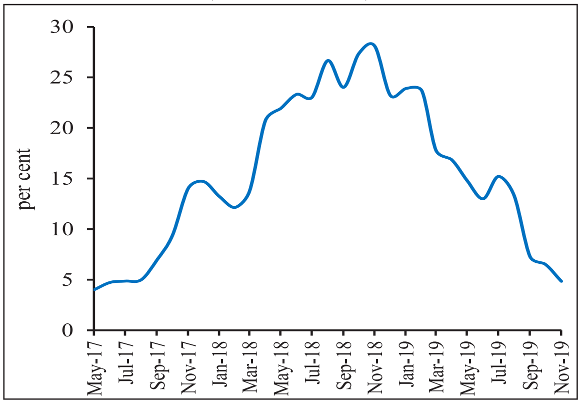

स्रोत: आरबीआई, भारतीय रेल

तालिका 2: सेवा उप क्षेत्रों में बैंक ऋण में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

सेवा उप क्षेत्र	वित्तीय वर्ष अब तक अप्रैल-नवम्बर 2019 (प्रतिशत में)	वित्तीय वर्ष अब तक अप्रैल-नवम्बर 2018 (प्रतिशत में)
सेवा	**-2.2**	**9.9**
ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर	0.9	6.6
कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर	2.8	2.8
पर्यटन, होटल और रेस्टोरेन्ट	11.4	5.3
जहाजरानी	-13.5	1.1
पेशेवर सेवाएं	-0.5	8.4
वाणिज्यिक अचल संपदा	9.1	1.0
एनबीएफसी को बैंक ऋण	14.0	14.1
खुदरा व्यापार	2.3	2.3
थोक व्यापार*	-13.2	3.1
अन्य सेवाएं	-20.7	16.9

स्रोत: आरबीआई

टिप्पणी: *खाद्य की खरीद के अलावा।

9.3 सेवा उप-क्षेत्र के लिए बैंक ऋण के आवंटन पर आरबीआई के आंकड़ों से पता चलता है कि ऋण वृद्धि में अप्रैल से नवम्बर 2019 के दौरान सुस्ती 'पेशेवर सेवाएं' 'जहाजरानी', 'ट्रांसपोर्ट ऑपरेटरों' तथा 'थोक व्यापार' के कारण रही है (तालिका 2)। 'पर्यटन, होटल और रेस्टोरेन्ट', 'वाणिज्यिक अचल संपत्ति', और 'गैर-बैंकिग वित्तीय निगमों (एनबीएफसी)' को बैंक ऋण अप्रैल-नवम्बर 2019 के दौरान अन्य उप-क्षेत्रों की तुलना में अधिक रहा।

9.4 राज्य और केन्द्र शासित प्रदेशों में सेवा क्षेत्र के निष्पादन से पता चलता है कि सेवा क्षेत्र का हिस्सा अब कुल 33 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेश में से 15 में सकल राज्य मूल्य संवर्द्धन (जीएसवीए) के 50 प्रतिशत से अधिक है (तालिका 3)। 8 राज्यों में सेवा क्षेत्र का सकल राज्य मूल्य संवर्द्धन में योगदान 60 प्रतिशत से अधिक है। चंडीगढ़ और दिल्ली में यह हिस्सेदारी 80 प्रतिशत से अधिक हैं, जब कि सिक्किम का हिस्सा 26.8 प्रतिशत पर सबसे कम बना हुआ है। यहां तक कि सकल राज्य मूल्य संवर्द्धन में सेवा की अपेक्षाकृत कम हिस्सेदारी वाले राज्य, जैसे कि झारखंड, ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, गुजरात, अरूणाचल प्रदेश और गोवा में भी हाल के वर्षों में सेवा क्षेत्र की मजबूत वृद्धि देखी गई है।

तालिका 3: राज्य और केन्द्र शासित प्रदेशों में सेवा क्षेत्र का प्रदर्शन

राज्य	2018-19 में सकल राज्य मूल्य संवर्द्धन में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी (प्रतिशत में)*	सेवा क्षेत्र में 5 वर्ष की औसत वृद्धि (प्रतिशत में, वर्ष दर वर्ष)**
चंडीगढ़*	86.7	7.3
दिल्ली	84.1	8.8
अण्डमान और निकोबार*	68.1	8.6
कर्नाटक	65.4	10.5
मणिपुर*	65.1	6.3
तेलंगाना	64.7	11.2
केरल*	62.7	6.4
बिहार	61.1	9.0
जम्मु और कश्मीर*	58.3	5.5
मेघालय*	59.0	7.5
महाराष्ट्र*	57.6	8.1
पश्चिम बंगाल	57.5	9.2
तमिलनाडु	54.2	6.9
नागालैण्ड*	54.1	4.9
हरियाणा	50.8	9.2
उत्तर प्रदेश	48.8	7.7
पुदुचेरी	48.5	6.0
असम*	47.8	6.9
मिजोरम*	46.8	7.8
पंजाब	46.5	7.2
राजस्थान	45.0	7.3
झारखण्ड	44.8	8.7
आन्ध्र प्रदेश	43.0	9.8
हिमाचल प्रदेश	42.8	7.6
अरूणाचल प्रदेश*	42.5	9.0
ओडिशा	41.8	8.4
उत्तराखण्ड	40.5	9.5
त्रिपुरा*	39.7	3.0
गोवा	38.0	8.4
छत्तीसगढ़	37.1	5.9
मध्य प्रदेश	35.9	6.7
गुजरात*	35.7	8.6
सिक्किम	26.8	4.4

स्रोत: सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

टिप्पणी: *2017-18 आंकड़ों के आधार पर; ** 2014-15 से 2018-19 तक का औसत, या 2013-14 से 2017-18 तक का औसत जहां 2018-19 के लिए आंकड़े अनुपलब्ध है।

सेवा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

9.5 उद्योग एंव आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग से प्राप्त प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के आंकड़ों से पता चलता है कि सेवा क्षेत्र[1] में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अन्तर्प्रवाहों (पुन: निवेशित आय को छोड़कर) में 2018-19 में गिरावट के बाद अप्रैल-सितम्बर 2019 के दौरान जोरदार बढ़ोत्तरी दर्ज हुई हैं। सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अन्तर्प्रवाहों में अप्रैल-सितंबर, 2019 के दौरान वर्ष दर वर्ष लगभग 33 प्रतिशत वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप यह 17.58 अरब यू.एस. डॉलर तक पहुंच गया था। (तालिका 4)। यह इस अवधि में भारत में कुल सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अंतर्वाह का लगभग दो-तिहाई है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अंतर्वाह में यह उछाल 'सूचना एवं प्रसारण', 'वायु यातायात', 'दूरसंचार', 'परामर्श सेवाएं' व 'होटल व पर्यटन' जैसे उपक्षेत्रों में मजबूत अंतर्वाह के कारण था।

तालिका 4: सेवा क्षेत्र में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अंतर्वाह*

सेवा उप क्षेत्र	2018-19 में सेवा क्षेत्र के अन्तर्गत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अंतर्वाह में हिस्सेदारी (प्रतिशत)	सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अंतर्वाह (मिलियन अमेरिकी डॉलर)			
		2017-18	2018-19	अप्रैल-सितं. 2018	अप्रैल-सितं. 2019
वित्त, व्यवसाय, आउटसोर्सिंग, आर एंड डी, कूरियर, तकनीकी जांच एंव विश्लेषण	20.6	6,709	9,158	4,915	4,455
कम्प्यूटर साफ्टवेयर और हॉर्डवेयर	14.5	6,153	6,415	2,541	4,025
व्यापार	10.1	4,348	4,462	2,143	2,143
दूरसंचार	6.0	6,212	2,668	2,178	4,280
सूचना एंव प्रसारण	2.8	639	1,252	58	196
होटल एवं पर्यटन	2.4	1,132	1,076	344	859
अस्पताल एंव जांच केन्द्र	2.4	708	1,045	345	376
शिक्षा	1.8	286	777	167	216
खुदरा व्यापार	1.0	224	443	256	243
परामर्शी सेवाएं	0.9	760	411	88	473
समुद्री परिवहन	0.6	1,051	279	117	173
वायु परिवहन	0.4	629	191	30	114
कृषि सेवाएं	0.2	110	88	29	23
सेवा क्षेत्र में सकल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश इक्विटी अंतर्वाह (यूएस डॉलर मिलियन में)		**28,960**	**28,264**	**13,209**	**17,577**
पिछली अवधि से परिवर्तन (प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष)		**15.0**	**-2.4**	**-20.5**	**33.1**
भारत में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी का अन्तर्वाह (यूएस डॉलर मिलियन में)		**44,857**	**44,366**	**22,664**	**26,096**
भारत में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी (प्रतिशत में)		**64.6**	**63.7**	**58.3**	**67.4**

स्रोत: उद्योग एंव आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी)
टिप्पणी: * पुन: निवेशित आय को छोड़कर।

1 वित्तीय सेवाओं, व्यापार सेवाओं, आउटसोर्सिंग, आर और डी, प्रोद्योगिकी परीक्षण और विश्लेषण, कूरियर, दूरसंचार, व्यापार, कम्प्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, होटल एवं पर्यटन, अस्पताल और जांच केन्द्र, परामर्श सेवाएं, समुद्री परिवहन, सूचना और प्रसारण, खुदरा व्यापार, कृषि सेवाएं, शिक्षा और हवाई परिवहन में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी अन्तर्वाह के रूप में अनुमानित हैं।

सेवा क्षेत्र में व्यापार

9.6 आरबीआई के भुगतान संतुलन आँकड़े दर्शाते हैं कि अप्रैल–सितम्बर 2019 के दौरान सेवाओं के निर्यात ने 2018–19 से अपनी गति बनाए रखी है तथा इसमें 6.4 प्रतिशत की वृद्धि (वर्ष दर वर्ष) दर्ज की गई। यात्रा, सॉफ्टवेयर, व्यवसाय और वित्तीय सेवाओं में निर्यात में वृद्धि ने बीमा और अन्य सेवाओं में (निर्माण कार्य आदि शामिल हैं) के निर्यात की वृद्धि में कमी की भरपाई कर दी है। (तालिका–5)। व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात में मजबूत वृद्धि, पेशेवर और प्रबंधन परामर्श सेवाओं, तकनीकी एवं व्यापार संबंधी सेवाओं तथा आर एण्ड डी सेवाओं के लिए उच्चतर प्राप्तियों द्वारा संचालित थी।

9.7 गत दशक में सेवा निर्यात की संरचना के रूझान दर्शाते हैं कि पारम्परिक सेवाओं जैसे परिवहन, और मूल्यवर्धित सेवाएं जैसे, सॉफ्टवेयर, वित्तीय सेवाओं और संचार की हिस्सेदारी में कमी आई गई है। इस बीच, पिछले एक दशक में यात्रा सेवाओ की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है तथा व्यवसायिक सेवाओं की हिस्सेदारी में मामूली वृद्धि हुई है। सॉफ्टवेयर सेवाओं की हिस्सेदारी में गत दशक में 4 प्रतिशत की गिरावट आई जिसके परिणामस्वरूप यह 2018–19 में कुल सेवा निर्यातों के 40 प्रतिशत पर पहुँच गई। इसके बावजूद भारत के सेवा निर्यात सॉफ्टवेयर सेवाओं पर केंद्रित रहे हैं इनका हिस्से दूसरे सबसे बड़े घटक, व्यापार सेवाओं के हिस्से का दो गुना है। इससे सॉफ्टवेयर क्षेत्र, और समग्र सेवा निर्यात;

तालिका 5: उप-क्षेत्र वार सेवा व्यापार प्रदर्शन

वस्तु समूह	हिस्सा प्रतिशत में मूल्य		(यूएस डॉलर बिलियन में)			वृद्धि (प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष)		
	2008-09	2018-19	2017-18	2018-19	Apr-Sep 2019-20 (P)	2017-18	2018-19	April-Sep 2019-20 (P)
कुल सेवा निर्यात			**195.1**	**208.0**	**104.6**	**18.8**	**6.6**	**6.4**
यात्रा	10	14	28.4	28.4	14.6	22.0	0.3	8.2
परिवहन	11	9	17.4	19.5	10.5	10.0	11.6	10.8
बीमा	1	1	2.5	2.7	1.2	13.6	6.2	-4.9
जीएनआईई*	0.4	0.3	0.7	0.6	0.3	12.9	-8.1	3.5
सॉफ्टवेयर सेवा	44	40	77.3	83.5	46.1	4.0	7.9	12.7
व्यावसायिक सेवा	18	19	37.3	39.1	22.4	13.4	4.7	18.6
वित्तीय सेवा	4	2	5.2	4.9	2.5	1.3	-5.9	4.3
संचार	2	1	2.1	2.6	1.3	-11.7	22.1	18.3
कुल आयात सेवा			**117.5**	**126.1**	**64.1**	**22.6**	**7.3**	**7.9**
यात्रा	18	17	19.5	21.7	12.2	18.6	11.2	4.3
परिवहन	25	16	17.6	20.5	12.1	24.6	16.6	22.8
बीमा	2	1	1.7	1.8	0.8	13.7	5.3	-0.7
जीएनआईई *	2	1	0.8	1.1	0.6	32.5	40.3	11.9
सॉफ्टवेयर सेवा	5	5	5.1	5.8	4.0	43.3	13.1	33.7
व्यवसाय सेवा	29	32	36.6	40.4	22.9	13.3	10.3	19.6
वित्तीय सेवा	6	3	5.5	3.5	1.1	-5.4	-37.0	-40.7
संचार	2	1	1.0	1.1	0.6	4.8	18.4	25.1
सेवा व्यापार शेष			**77.6**	**81.9**	**40.5**			
माल व्यापार शेष			**-160.0**	**-180.3**	**-84.3**			

स्रोत: आरबीआई

टिप्पणी: * जीएनआईई – सरकार जो अन्यत्र शामिल नहीं है; P: प्रारम्भिक।

विनिमय दर में परिवर्तन, वैश्विक आई टी खर्च, कड़े यू.एस.ए. वीजा मानदंड और निर्यात स्थलों में स्थानीय रोजगार में वृद्धि के कारण बढ़ते लागत दबाव लागत के प्रति संवेदनशील हो गया है। हालांकि गार्टर्नर के अक्टूबर 2019 के अनुमान के अनुसार वैश्विक आईटी व्यय में 2020 में तेजी आने की संभावना है परंतु उत्पादन लागत में वृद्धि और संयुक्त राज्य अमेरिका के वीजा मानदंड़ व ब्रेक्जिट से सम्बन्धित अनिश्चितता भारत के सॉफ्टवेयर निर्यात में गिरावट आने का जोखिम पैदा करती हैं।

9.8 अप्रैल-सितम्बर 2019 के दौरान सेवा आयात में वृद्धि (वर्ष दर वर्ष) 7.9 प्रतिशत दर्ज की गई है। परिवहन, सॉफ्टवेयर, संचार और व्यावसायिक सेवाओं के आयात में वृद्धि ने वित्तीय और बीमा सेवाओं के आयात में संकुचन और यात्रा सेवाओं के आयात में मंदी की भरपाई की है। व्यापार सेवाओं के भुगतान में वृद्धि मुख्य रूप से पेशेवर, प्रबंधन और परामर्श सेवाओं, और तकनीकी और व्यापार संबंधी सेवाओं द्वारा संचालित थी।

9.9 सेवाओं का निवल निर्यात अप्रैल-सितम्बर, 2018 के स्तर 38.9 बिलियन यू.एस. डॉलर से बढ़कर अप्रैल से सितम्बर 2019 के दौरान 40.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर गया, जो कि वर्ष-दर-वर्ष 4.1 प्रतिशत अधिक है। सेवा व्यापार अधिशेष जो कि काफी हद तक सॉफ्टवेयर सेवाओं में अधिशेष द्वारा संचालित है ने अप्रैल से सितम्बर 2019 के दौरान भारत के वाणिज्यिक वस्तुओं के घाटे के 48 प्रतिशत को वित्तपोषित किया है और इस प्रकार चालू खाते के घाटे पर इसके प्रभाव की आंशिक रूप से भरपाई की है।

9.10 सॉफ्टवेयर सेवाओं के अलावा भारत का यात्रा, बीमा और वित्तीय सेवाओं से भी थोड़ा व्यापार अधिशेष है। हाँलाकि यात्रा सेवाओं के अन्तर्गत, भारत में शिक्षा सेवाओं में लगातार व्यापार घाटा रहा है, तथा शैक्षिक आयातों, अर्थात् शैक्षिक उद्देश्यों से विदेश जाने वाले भारतीय छात्रों द्वारा ट्यूशन, कमरे और भोजन पर होने वाला व्यय 2018-19 में लगभग 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है। इसमें शैक्षिक प्रयोजनो से किए गए अन्य भुगतानों जैसे कि विदेशी पत्राचार पाठ्यक्रमों, जो कि विदेश से शैक्षिक सेवाएं प्राप्त करने हेतु किया गया भुगतान है, को जोड़ दिया जाए, पता चलता है कि हाल के वर्षों में भारत के शैक्षिक सेवा आयातों में काफी वृद्धि हुई है और यह 2018-19 में 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है (चित्र 2)।

9.11 दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य से, भारत का द्विपक्षीय व्यापार वार्ताओं के दौरान सेवाओं के निर्यात पर बढ़ावा देने पर बल देना व्यापारिक साझेदारों के साथ द्विपक्षीय व्यापार घाटों को कम करने की दिशा में एक अच्छा संकेत है। आगे देखें तो वस्तुओं व सेवाओं में विश्व व्यापार में 2019 में मंदी के बाद 2020 में फिर से बेहतरी आने का अनुमान है। वैश्विक अनिश्चितता, संरक्षणवाद और कड़े प्रवासन नियम आने वाले समय में भारत के सेवा व्यापार को आकार देने वाले प्रमुख कारक होंगे।

चित्र 2: शिक्षा सेवाओं का आयात

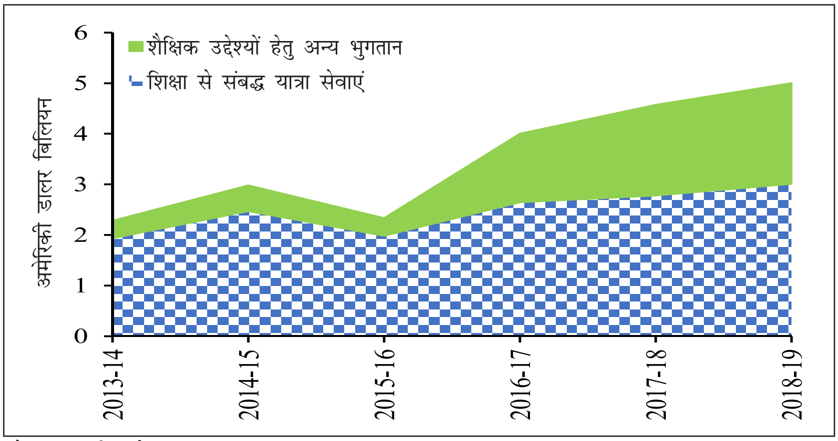

स्रोत: आरबीआई

टिप्पणी: शैक्षिक यात्रा सेवाओं में भारतीय छात्रों द्वारा विदेशों में शिक्षण, कमरे एवं भोजन व्यवस्था पर किया गया व्यय शामिल है।

बॉक्स 1: विश्व की वाणिज्यिक सेवाओं[2] के निर्यात में भारत

आर्थिक क्रियाकलापों में सेवाओं की बढ़ती भूमिका वैश्विक व्यापार में एवं भारत के व्यापार में सेवाओं के बढ़ते महत्व में भी परिलक्षित होती है। दो समयावधियों 2005-11 एवं 2012-2018 को देखते हुए यह स्पष्ट है कि वाणिज्यिक सेवाओं का निर्यात और वस्तुओं का निर्यात, दोनों अभी हाल ही के वर्षों में भारत में और वैश्विक स्तर पर धीमे हुए है (तालिका-क)। तथापि, जहां एक ओर वर्ष 2005-11 के दौरान वाणिज्यिक वस्तुओं के निर्यात सेवाओं के निर्यात की तुलना में अधिक तेजी से बढ़े थे, वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात ने हाल ही में वस्तुओं के निर्यात से बेहतर प्रदर्शन किया है। इसके कारण भारत और वैश्विक, दोनों स्तरों पर समग्र निर्यात में वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है।

तालिका क: भारत एवं वैश्विक स्तर पर सेवाओं एव वस्तुओं के निर्यात का निष्पादन

देश	वस्तु निर्यात में वृद्धि (प्रतिशत)		वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात में वृद्धि (प्रतिशत)		कुल निर्यातों में वाणिज्यिक सेवा निर्यातों की हिस्सेदारी (प्रतिशत)	
	सीएजीआर 2005-11	सीएजीआर 2012-18	सीएजीआर 2005-11	सीएजीआर 2012-18	2005	2018
विश्व	9.7	0.8	8.9	4.4	19.8	22.9
भारत	20.4	1.5	17.7	5.9	34.2	38.6

स्रोत: डब्ल्यूटीओ
टिप्पणी: समस्त गणनाएं कैलेंडर वर्ष पर आधारित हैं।

डब्ल्यूटीओ आंकड़ों के अनुसार विश्व के व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी पिछले एक दशक में तेजी से बढ़कर 2018 में 3.5 प्रतिशत हो गई है जोकि विश्व के वस्तु निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 1.7 प्रतिशत का दुगना है। विश्व में व्यावसायिक सेवाओं के सबसे बड़े निर्यातकों में अब भारत का 8वां स्थान है और अन्य प्रमुख सेवाओं-निर्यातक देशों के साथ-साथ विश्व सेवाओं के निर्यात वृद्धि (तालिका ख) के सापेक्ष भारत का सुदृढ़ वृद्धि निष्पादन जारी है।

तालिका ख: सर्वोच्च 10 निर्यातक देशों में व्यावसायिक सेवाओं का निर्यात

देश	वर्ष 2018 में वैश्विक व्यावसायिक सेवा निर्यातों में हिस्सेदारी	वैश्विक क्रय (रैंकिंग) में स्थान 2018	व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात में वृद्धि (प्रतिशत वर्ष-दर-वर्ष)		
			2017	2018	जन.-जून 2019
विश्व			**8.0**	**7.7**	**N.A.**
संयुक्त राज्य अमेरिका	14.0	1	5.2	3.8	0.7
ग्रेट ब्रिटेन	6.5	2	2.4	5.6	-3.0
जर्मनी	5.6	3	8.0	7.3	-2.4
फ्रांस	5.0	4	5.7	6.2	-7.0
चीन	4.6	5	8.7	17.1	4.2
नीदरलैंड	4.2	6	14.3	11.4	3.4
आयरलैंड	3.6	7	20.5	14.3	10.9
भारत	**3.5**	**8**	**14.5**	**10.7**	**7.1**
जापान	3.2	9	6.4	3.1	3.6
सिंगापुर	3.2	10	10.0	6.6	-2.1

स्रोत: डब्ल्यूटीओ
टिप्पणी: समस्त गणनाएं कैलेण्डर वर्ष पर आधारित हैं। NA अभिप्राय उपलब्ध नहीं है।

2 वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात से संदर्भ समस्त सेवाओं के निर्यात से है जिसमें सरकारी सेवाएं शामिल नहीं हैं।

भारत में समग्र निर्यातों में सेवा निर्यातों की हिस्सेदाारी विश्व की प्रमुख सेवा निर्यातक सर्थव्यवस्थाओं के मध्य सापेक्षिक रूप से अधिक हिस्सेदारी है (चित्र क)।

चित्र क: वर्ष 2018 में प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के कुल निर्यात में व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात की हिस्सेदारी

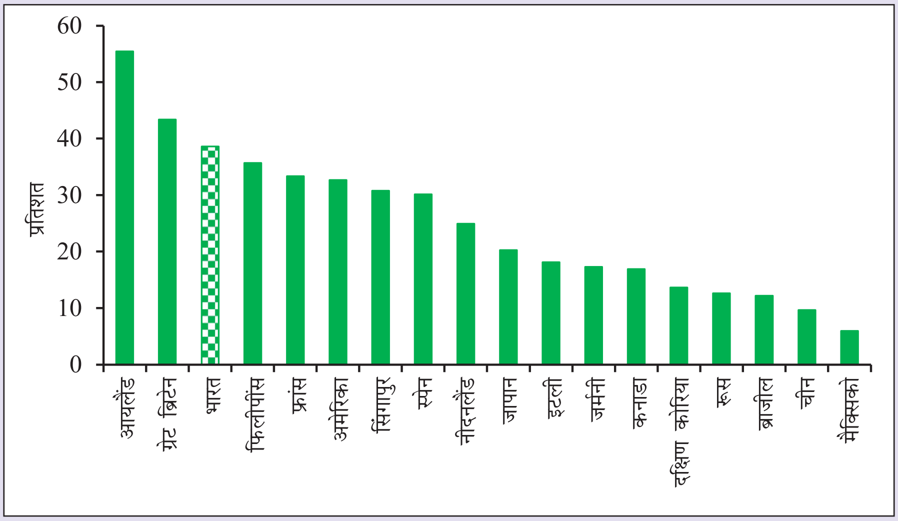

स्रोत: समस्त गणनाएं डब्ल्यूटीओ के आंकड़ों पर आधारित हैं।
टिप्पणी: समस्त गणनाएं कैलेण्डर वर्ष पर आधारित हैं।

बाक्स 2: वित्तीय सेवाओं के निर्यात के संवर्धन के लिए अपतटीय (ऑफशोर) निधि प्रबंधन उद्योग का विकास

सरकार द्वारा वित्तीय सेवा क्षेत्र की पहचान चैंपियन सेवा क्षेत्रों में से एक क्षेत्र के रूप में की गई है ताकि वर्तमान में वैश्विक वित्तीय केन्द्रों से प्रदान की जा रही भारत से संबंधित वित्तीय सेवाओं की ऑन शोरिंग करने में सक्षम किया जा सके। इससे वित्तीय सेवाओं के निर्यात और उच्च कौशल वाले रोजगार को बढ़वा मिलेगा। सेवाओं के निर्यात में भारत के सुदृढ़ निष्पादन (बाक्स 1) के बावजूद भारत की वित्तीय सेवाओं का निर्यात गतिहीन रहा है जो कि अभी हाल ही के वर्षों में औसतन लगभग 5 बिलियन अमेरिकी डालर रहा है। इसके परिणामस्वरूप, समग्र सेवाओं के निर्यात में वित्तीय सेवाओं के निर्यात की हिस्सेदारी वर्ष 2011-12 में 4.2 प्रतिशत से लगभग आधी होकर वर्ष 2018-19 में 2.3 प्रतिशत हो गई है (चित्र ख)।

अपतटीय निधियों का ग्रास्ति प्रबंधन एक प्रकार की वित्तीय मौजूदा समय में वैश्विक वित्तीत केन्द्रों से प्रदान की जा रही में से एक है और संभवत: ऑन-शोर लाया जा सकता है। यह ऑफशोर निधियां कर एवं विनियामक अनुकूल क्षेत्राधिकारों जैसे सिंगापुर, लक्समबर्ग, आयरलैंड, हांगकांग एवं लंदन में अवस्थित हैं। ये ऑफशोर निवेशकों से निवेश इकट्ठा करती है तथा विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई), निजी इक्विटी (पीई) या विदेशी उद्यम पूंजी निवेश (एफवीसीआई) मार्ग से भारत में निवेश करती है। इस प्रकार की निधियों में शामिल है। भारत में केन्द्रित वे आफशोर निधियां जिनका निवेश केवल भारत में ही होता हैं और भारत में आंशिक निवेश आबंटन करने वाली क्षेत्रीय/वैश्विक विविधीकृत निधियां (तालिका ग)। चूंकि, आगामी वर्षों में भारत में विदेशी निवेश में वृद्धि जारी रहेगी, इसलिए भारत में आफशोर निधियों के निधि प्रबंधन क्रियाकलाप की ऑन-शोरिंग अर्थव्यवस्था के लिए नीचे दिए अनुसार लाभदायक होगी-

- भारत के परिसंपत्ति प्रबंधन उद्योग जिसमें अभी हाल ही वर्षों में काफी अधिक महत्वपूर्ण हुई है के निरंतर विस्तार में योगदान देना (तालिका ग)। दि एस्सेट मैनेजर्स राउंडटेबल ऑफ इंडिया (एमएमआरआई) के अनुमान के अनुसार वर्ष 2020 तक एफपीआई, पीई एवं एफवीसीआई निधियों के कुल प्रबंधन अधीन परिसम्पत्तियों (एयूएम) की लगभग

25 प्रतिशत निधि प्रबंधन क्रियाकलापों के और आगामी वर्षों में इनके एयूएम के वृहत्तर भाग के ऑनशोर होने की संभावना है। यह मानते हुए कि वर्ष 2020 तक एफपीआई की कुल एयूएम 542 बिलियन अमेरिकी डॉलर है और पीई/एफवीसीआई की कुल एयूएम 326 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, इसका तात्पर्य है कि एमआरआई अनुमानों के अनुसार एफपीआई निधि के लगभग 136 बिलियन अमेरिकी डॉलर तथा पीई/एफवीसीआई निधियों के 82 बिलियन अमेरिकी डॉलर अर्थात कुल परिसंपत्ति में 217 बिलियन अमेरिकी डॉलर के वर्ष 2020 तक भारत में ऑनशोर होने की संभावना है।

- निधि प्रबंधकों एवं जैसे कि सहायक सेवा प्रदाताओं अभिरक्षकों, निधि विशेषज्ञों, निधि लेखाकारों, निधि प्रशासकों, जोखिम प्रबंधकों, शोध विश्लेषक पेशेवरों एवं कर सलाहकारों जैसे अति कुशल वित्त पेशेवरों के लिए रोजगार उत्पन्न करना। आफशोर निधियों के प्रबंधन के लिए निधि प्रबंधकों द्वारा प्राप्त प्रबंधन शुल्क वित्तीय सेवाओं के निर्यात का भाग होगा। 1 प्रतिशत प्रबंधन शुल्क (वैश्विक रूप से 2 प्रतिशत की तुलना में) के एक रूढ़िवादी अनुमान के आध ार पर एएमआरआई का अनुमान है कि 2020 में आफशोर निधियों की परिसंपत्ति में 217 बिलियन अमेरिकी डॉलर के ऑनशोर प्रबंधन से निधि प्रबंधन शुल्क और परिणामस्वरूप वित्तीय सेवाओं के निर्यात मे 2.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर की प्राप्ति होगी।

चित्र ख: भारत का वित्तीय सेवाओं का निर्यात

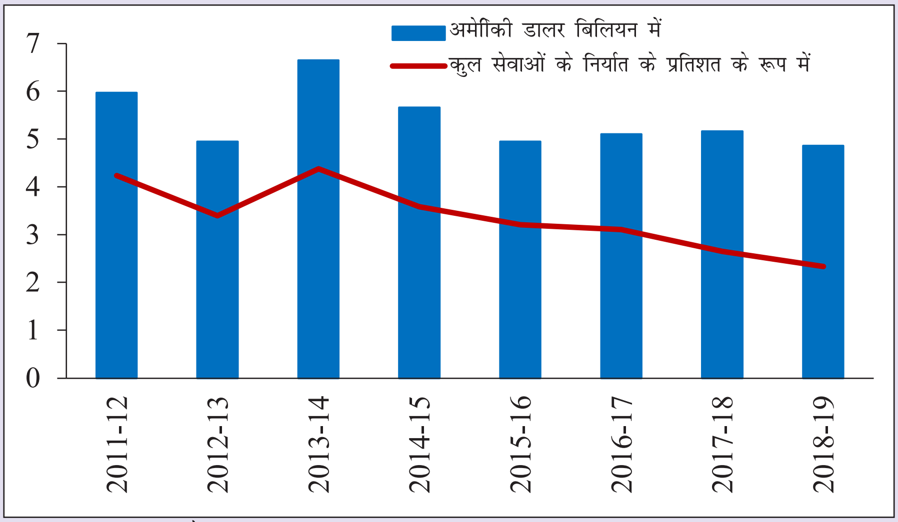

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक

तालिका ग: भारत के स्वदेशी निधि प्रबंधन उद्योग एवं ऑफशोर निधियों का आकार

स्वदेशी निधियां (अमेरिकी डॉलर बिलियन)	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियों का एयूएम	129	137	173	186	271	328	344
पोर्टफोलियो प्रबंधक* द्वारा प्रबंधित परिसंपत्तियां	12	14	19	21	29	38	41
वैकल्पिक निवेश निधियों का एयूएम	0.3	2	4	6	13	25	41

एफ डी आई निधियां** (यूएस बिलियन)	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018
एफपीआई का एएमयू	243	237	356	351	346	514	451
भारत केंद्रित एफपीआई अपतटीय निधियों का एयूएम***	21	17	23	24	22	31	N.A.

स्रोत: असेट मैनेजर्स राउण्डटेबल ऑफ इण्डिया (AMRI) के आकलन: गणनाएँ वेबी, एन एल डी एल, मॉर्निंस्टार, वी सी सी एज, व वेन्चर इण्टेलीजेन्स के आंकड़ों पर आधारित

##: नोट: इसमें गैर-ई पी एफ ओ/पी एफ विवेकाधीन परिसाचत्तियाँ व गैर-विवेकाधीन परिसाचान्तियाँ शामिल हैं।

** आँकड़े कैलेण्डर वर्ष के आधार पर है; *** यदि भारत में आंशिक निवेश आवण्टन वाले क्षेत्रीय/विदेशी विविधकृत एफ पी आई ऑफशोर फएडों के ए एम यू को शामिल किया जाए तो आकलन उच्चतर होंगे; NA अनुपलब्ध

वर्तमान में अपतटीय निधियों की निधि प्रबंधन गतिविधियां ऐसे निधि प्रबंधकों द्वारा की जाती हैं, जो प्राय: भारत मूल के होते हैं तथा ये अपतटीय क्षेत्राधिकार में रहते हैं क्योंकि उनके भारत में रहने से अपतटीय निधि लाभ के लिए कर दायित्व बन जाता है। अप्रैल 2016 में, सरकार ने आयकर अधिनियम, (1961) की धारा 9ए, के रूप में 'सुरक्षित बंदरगाह' प्रावधान लागू किया था जिसके तहत कुछ पात्रता शर्तों को पूरा करने पर, अपतटीय निधि को केवल इस निधि के प्रबंधक के भारत में स्थित होने के आधार पर कर उद्देश्यों के लिए 'निवासी' नहीं माना जाएगा। तथापि अधिकांश अपतटीय निधि या 'सुरक्षित बंदरगाह' प्रावधानों का उपयोग नहीं कर पाई हैं क्योंकि इन्हें निधि की संरचना, निवेशकों के संयोजन, निवेश गतिविधि और निधि प्रबंधक की गतिविधि और पारिश्रमिक से संबंधित कुल 17 सख्त पात्रता शर्तों को पूरा करना होता है। इनमें से कुछ शर्तें अपतटीय निधियों तथा भारत में पीएफआई के अन्तर्वाहों की प्रकृति के साथ मेल नहीं खाती हैं और इससे अपतटीय निवेशकों को दोहरे अनुपालनात्मक भार को वहन करना होता है क्योंकि उन्हें पीएफआई और राउंड ट्रीपिंग में अंत्य निवेशकों से संबंधित आरबीआई और एसईबीआई के विनियमों का भी अनुपालन करना होता है।

इसकी तुलना में प्रमुख निधि प्रबंधन क्षेत्राधिकारों जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, सिंगापुर और हांग कांग में बहुत से मामलों में अपतटीय निधियों के लिए सुरक्षित बंदरगाह के प्रावधान में पात्रता की शर्तें कम और सरल हैं, साथ ही कर प्राधिकारियों के पास अपतटीय निधि की संरचना और निवेश के पैटर्न का मूल्यांकन करने और अलग-अलग मामले के आधार पर अपवादों के लिए अनुमति देने का विशेषाधिकार उपलब्ध हैं।

उपरोक्त चुनौतियों के मद्देनजर, वाणिज्य मंत्रालय की उच्च-स्तरीय सलाहकार समूह (एचएलएजी)की रिपोर्ट (सितंबर 2019) ने अपनी निधि प्रबंधन गतिविधियों को तट पर (ऑन शोर) करने की इच्छुक अपतटीय निधियों हेतु कर ढ़ाचें को सरल बनाने व कर निवासन जोखिम को हटाने की सिफारिश की अपतटीय निधि और निधि प्रबंधक एसईबीआई से पंजीकृत होते हैं और एसईबीआई नियमों के अनुरूप होते हैं। आयकर अधिनियम (1961) के अनुच्छेद 9ए की सुरक्षित बन्दरगाह प्रणाली को क्रियान्वित करने से भारत केन्द्रित अपतटीय निधियां तथा संभवत: भारत में आंशिक आवंटन वानली वैश्विक अपतटीय निधियों की निधि प्रबंधन गतिविधियों की ऑनशोरिंग संभव हो पाएगी। इससे एफपीआई की निधि प्रबंधन गतिविधि का भारत में अधिक प्रत्यायोजन संभव हो पाएगा, क्योंकि आने वाले वर्षों में एफपीआई अन्तर्वाहों के जारी रहने की संभावना है।

मुख्य सेवाएं: उप क्षेत्रवार निष्पादन और अभिनव नीतियां

9.12 सेवा क्षेत्र के अधिकांश उप क्षेत्रों में 2019-20 वृद्धि में गिरावट देखी गयी है (तालिका 6)। 2019-20 में पर्यटन क्षेत्र की वृद्धि में विदेशी पर्यटकों के आगमन और इसके परिणामस्वरूप पर्यटन से विदेशी विनमय की आमदनी में वृद्धि कमजोर रहने के कारण मंदी देखी गई। पत्तन क्षेत्र में पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2019-20 के दौरान पत्तन यातायात में कम वृद्धि हुई। 2019-20 में वायरलैस फोन सदस्यता और वायरलैस इंटरनैट सदस्यता में बढ़ोत्तरी हुई। इस खंड में सेवा क्षेत्र के कुछ प्रमुख उप क्षेत्रों के घटनाक्रम के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है।

तालिका 6: भारत के प्रमुख सेवा उप-क्षेत्रों का निष्पादन

उप क्षेत्र	संकेतक	एकाई	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20
आईटी बीपीएम*	आईटी बीपीएम राजस्व सेवा	बिलियन अमेरिकी डॉलर	118.6	129.4	139.9	151.4	161.8 (E)	-
	निर्यात	बिलियन अमेरिकी डॉलर	97.7	107.8	116.1	125.1	135.5 (E)	-
	घरेलू	बिलियन अमेरिकी डॉलर	20.9	21.6	23.8	26.3	26.3 (E)	-
विमानन**	एअर लाइन यात्री:	मिलियन	115.8	135.0	158.4	183.9	204.2	-
	घरेलू	मिलियन	70.1	85.2	103.7	123.3	140.3	95.7#
	अंतर्राष्ट्रीय	मिलियन	45.7	49.8	54.7	60.6	63.9	15.6@
दूरसंचार	वायरलैस फोन सदस्य	मिलियन	969.9	1033.6	1170.2	1183.4	1161.8	1154.6$
	वायरलैस इंटरनेट सदस्य	मिलियन	283.3	322.2	400.6	472.7	615.0	665.4%
पर्यटन	विदेशी पर्यटक आगमन[b]	मिलियन	7.7	8.0	8.8	10.0	10.6	8.6##
	पर्यटकों से विदेशी विनमय आय[b]	बिलियन अमेरिकी डॉलर	19.7	21.0	22.9	27.3	28.6	24.0##
नौवहन	पत्तन यातायात	मिलियन टन	581.3	606.5	648.4	679.4	699.1	524.0^

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय, भारतीय पत्तन संघ, जहाजरानी मंत्रालय, नागर विमानन महानिदेशालय, भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण, नैसकॉम।

नोट: * हार्डवेयर व ई-कॉमर्स को छोड़कर; ** भारतीय वाहकों द्वारा वाहित किए गए घरेलू यात्री तथा भारतीय व विदेशी वाहकों द्वारा वाहित किए गए अन्तर्राष्ट्रीय यात्री; [b]कैलेंण्डर वर्ष के आधार पर; # अप्रैल-नवम्बर 2019 की अवधि हेतु; @ अप्रैल-जून 2019 की अवधि हेतु; $ नवम्बर 2019 में; ## जनवरी-अक्टूबर 2019 की अवधि हेतु; % सितम्बर 2019 में; ^ अप्रैल-दिसम्बर 2019 की अवधि हेतु; E: आंकलन।

पर्यटन क्षेत्र

9.13 पर्यटन क्षेत्र, सकल घरेलू उत्पाद, विदेशी मुद्रा आय और रोजगार में योगदान करने वाला विकास का एक प्रमुख इंजन है। भारत में पर्यटन के क्षेत्र में वर्ष 2015 से 2017 तक विदेशी पर्यटक आगमन में उच्चवृद्धि के कारण पर्यटन क्षेत्र में मजबूत निष्पादन देखा गया। परन्तु विदेशी पर्यटकों के आगमन में तब से धीमापन आया है और इसमें वृद्धि वर्ष 2018 में 5.2 प्रतिशत और जनवरी-अक्तूबर 2019 में 2.7 प्रतिशत की वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) रह गई। (चित्र 3 (क))। परन्तु यह रुझान केवल भारत में ही नहीं हैं बल्कि पूरे विश्व में भी अंतरर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन की वृद्धि दर वर्ष 2017 में 7.1 प्रतिशत से कम होकर वर्ष 2018 में 5.4 प्रतिशत कम हो गई है (तालिका 7)।

9.14 तदनुसार मजबूत वृद्धि पर्यटन क्षेत्र से विदेशी मुद्रा आय में वृद्धि में 2017 तक मजबूती के बाद 2018 व 2019 में गिरावट देखी गयी है (चित्र 3 (ख))। जनवरी-अक्तूबर 2019 में कुल विदेशी मुद्रा आय 2 प्रतिशत वर्ष दर वर्ष वृद्धि के साथ 24 बिलियन यू एस डॉलर थी।

तालिका 7: भारत एवं विश्व में विदेशी एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन और पर्यटन से आय

सूचक	2014	2015	2016	2017	2018
भारत में विदेशी पर्यटक आगमन (एफटीए) (मिलियन)*	7.68	8.03	8.80	10.04	10.56
भारत में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन (एचए) (मिलियन)**	13.11	13.76	15.03	16.81	17.42
विश्व में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन (मिलियन)	1137	1195	1241	1329	1401
विश्व के अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक अगमन में भारत का हिस्सा	1.15	1.15	1.21	1.26	1.24
विश्व के अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में भारत का स्थान	24th	24th	26th	26th	22nd
एशिया प्रशांत के अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में भारत का हिस्सा (प्रतिशत)	4.86	4.84	4.90	5.19	5.01
एशिया प्रशांत के अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में भारत का स्थान	8th	7th	8th	7th	7th
विश्व पर्यटन आय में भारत का हिस्सा (प्रतिशत)	1.57	1.73	1.84	2.03	1.97#
विश्व पर्यटन आय में भारत का स्थान	15th	14th	13th	13th	13th#
एशिया प्रशांत की पर्यटन आय में भारत का हिस्सा (प्रतिशत)	5.49	5.91	6.18	6.90	6.54#
एशिया प्रशांत की पर्यटन आय में भारत का स्थान	7th	7th	7th	7th	7th#

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय

टिप्पणी: * विदेशी पासपोर्ट पर देश में आने वाले पर्यटकों के संबंध में आप्रवास ब्यूरों से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित;
** विदेशी पासपोर्ट पर देश में आने वाले पर्यटक एवं देश में आने वाले अनिवासी नागरिक; #अनंतिम। अंतराष्ट्रीय पर्यटक आगमन, देश में विदेशी पर्यटक आगमन एवं अनिवासी भारतीय आगमन का योगफल है।

चित्र 3 (क) भारत में विदेशी पर्यटक आगमन में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

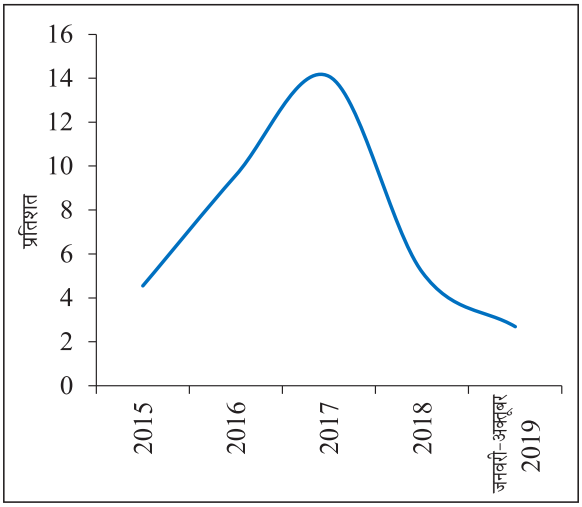

चित्र 3 (ख) पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय में वृद्धि (वर्ष दर वर्ष)

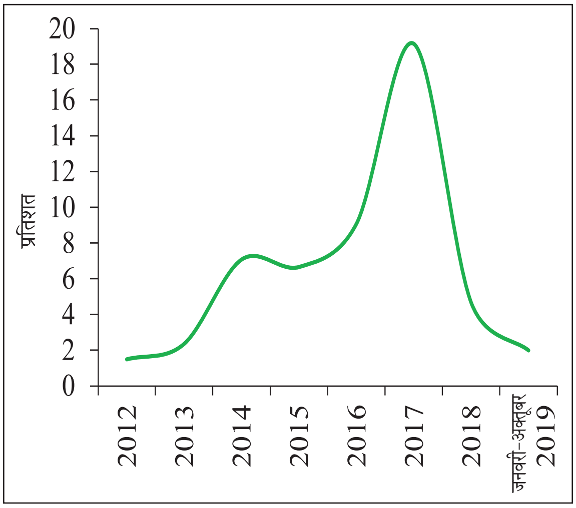

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय

टिप्पणी: 2019 के लिए आंकड़े अनंतिम है।

9.15 अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन के संदर्भ में भारत का स्थान वर्ष 2017 में 26वें से सुधर कर वर्ष 2018 में 22वें पर आ गया। भारत का हिस्सा अब विश्व के अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में 1.24 प्रतिशत और एशिया एवं प्रशांत के अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आगमन में 5 प्रतिशत है (तालिका 7)। पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय के संदर्भ में भारत का स्थान विश्व में 13वां और एशिया व पैसिफिक में 7वां है तथा विदश्व की पर्णटन से में हिस्सेदारी विदेशी मुद्रा आय का लगभग 2 प्रतिशत है।

9.16 भारत आने वाले शीर्ष 10 देशों-बंगलादेश, संयुक्त राज्य अमेरिका, यू के, श्रीलंका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, चीन, जर्मनी और रूस से आने वाले विदेशी पर्यटकों का भारत के कुल विदेशी पर्यटक आगमन

में अंश 2018 में 65 प्रतिशत था। आने वाले विदेशी पर्यटकों में 62.4 प्रतिशत छुट्टी व्यतीत करने और मनोरंजन के लिए 16.3 प्रतिशत पर्यटक व्यवसाय के प्रयोजनों के लिए आए और 13.5 प्रतिशत भारतीय प्रवासी समुदाय से थे।

9.17 राज्य स्तर पर पर्यटन रूझान को देखें तो स्वदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने वाले शीर्ष 5 राज्य तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र है जिनका हिस्सा वर्ष 2018 में देश में कुल स्वदेशी पर्यटन का लगभग 65 प्रतिशत है। विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने वाले शीर्ष 5 राज्य तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश दिल्ली और राजस्थान हैं जिनका हिस्सा वर्ष 2018 में कुल विदेशी पर्यटन में लगभग 67 प्रतिशत है।

9.18 अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत ने 46 राष्ट्रों के लिए सितम्बर 2014 में ई-पर्यटक वीजा प्रणाली प्रारंभ की। इस स्कीम को प्रारंभ करने से पहले केवल 12 देशों के लिए ही ई वीजा सुविधा उपलब्ध थी। सरकार ने वर्ष 2016 में वीजा प्रणाली को और भी उदार कर दिया है तथा इसका नाम बदल कर ई-वीजा स्कीम रख दिया है जिसके अंर्तगत 5 उपश्रेणियां ''ई पर्यटक वीजा'' ''ई-विजनेस वीजा'' ''ई-चिकित्सा वीजा'', ''ई-कान्फ्रेंस वीजा'' और ''ई.-चिकित्सकीय परिचारक वीजा'' हैं। अब यह ई-वीजा स्कीम 28 निर्दिष्ट विमान पत्तनों और 5 निदिष्ट बंदरगाहों के माध्यम से वैध प्रवेश सुविधा के साथ 169 देशों के लिए उपलब्ध है। इसके साथ ई-वीजा से भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या वर्ष 2015 में 4.45 लाख से बढ़कर वर्ष 2018 में 23.69 लाख हो गई। जनवरी-अक्तूबर 2019 में यह पिछले वर्ष से वर्ष-दर-वर्ष लगभग 21 प्रतिशत वृद्धि दर्ज करके 21.75 लाख रही।

बॉक्स 3: राज्यों के सकल संवर्द्धन मूल्य और रोजगार में पर्यटन का हिस्सा

राष्ट्रीय अनुप्रयुक्त आर्थिक अनुसंधान परिषद (एनसीएईआर) के साथ पर्यटन मंत्रालय ने संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा संस्तुत कार्यप्रणाली को अपनाते हुए पर्यटन उपग्रह लेखा (टीएसए) तैयार किया है। राज्य सकल मूल्य वर्धन में पर्यटन से प्रत्यक्ष सकल मूल्य वर्धन (टीडीजीवीए) का राज्य-वार हिस्सा तथा कुल राज्य रोजगार में पर्यटन रोजगार का हिस्सा पर्यटन मंत्रालय और एनसीईएआर की ड्राफ्ट रिपोर्ट (तालिका क) में अनुमानित किया गया है।

तालिका क: राज्य सकल मूल्य वर्धन और रोजगार में पर्यटन का अंश

राज्य	वर्ष 2015-16 में राज्य सकल मूल्य वर्धन में टीडीजीवीए का हिस्सा		वर्ष 2015-16 में राज्य रोजगार में पर्यटन रोजगार का हिस्सा	
	प्रत्यक्ष (प्रतिशत)	प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (प्रतिशत)	प्रत्यक्ष (प्रतिशत)	प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (प्रतिशत)
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	4.63	10.39	11.09	24.07
आंध्र प्रदेश	2.29	4.66	5.41	12.84
अरूणाचल प्रदेश	1.21	2.39	2.20	4.76
असम	2.19	4.32	4.41	8.75
बिहार	2.96	5.99	4.17	10.50
चंडीगढ़	3.87	9.17	6.70	12.37
छत्तीसगढ़	2.13	4.44	2.41	7.65

दादरा व नागर हवेली	0.79	1.79	7.01	23.81
दमन और दीव	0.75	1.36	11.71	29.35
दिल्ली	4.32	7.78	12.40	21.05
गोवा	5.50	11.55	19.38	40.92
गुजरात	1.78	3.96	5.85	15.39
हरियाणा	1.95	3.88	5.98	10.15
हिमाचल प्रदेश	3.20	6.89	10.23	20.23
जम्मू व कश्मीर	3.68	7.48	6.74	16.45
झारखण्ड	2.10	4.18	3.89	9.12
कर्नाटक	2.63	5.74	5.46	17.74
केरल	4.34	8.72	11.20	25.87
लक्षद्वीप	4.30	9.02	21.95	49.71
मध्य प्रदेश	2.39	4.90	3.34	8.45
महाराष्ट्र	3.08	5.52	5.66	12.46
मणिपुर	2.38	5.50	6.25	12.05
मेघालय	2.39	5.22	2.87	10.44
मिजोरम	1.25	2.55	4.57	10.96
नागालैंड	1.87	3.55	3.58	8.34
ओडिशा	2.43	5.00	5.27	12.11
पुदुच्चेरी	1.73	4.08	14.25	56.24
पंजाब	1.90	3.75	6.69	12.33
राजस्थान	2.73	5.63	5.18	11.26
सिक्किम	2.12	4.40	6.84	13.07
तमिलनाडु	2.59	5.37	6.36	15.97
तेलंगाना	2.29	5.07	5.13	17.83
त्रिपुरा	1.53	2.99	3.05	5.05
उत्तर प्रदेश	2.24	4.63	4.46	11.39
उत्तराखण्ड	2.29	5.27	7.99	21.18
पश्चिम बंगाल	2.09	4.30	6.41	14.34

स्रोत: पर्यटन मंत्रालय, एनसीएईआर

सूचना प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक प्रक्रिया प्रबंधन (आई-टी-वीपीएम)

9.19 भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी-व्यावसायिक प्रक्रिया प्रबंधन उद्योग विगत दो दशकों से भारत के निर्यात का ध्वजवाहक रहा है और मार्च 2019 में इस उद्योग का आकार 177 बिलियन अमेरिकी डालर पहुंच गया। यह क्षेत्र रोजगार वृद्धि और मूल्य वर्धन के माध्यम से अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण रूप से योगदान करता है। वर्ष 2018-19 में आईटी-बीपीएमक्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं का अंश 51 प्रतिशत था। इसके बाद सॉफ्टवेयर व अभियांगिकी (20.6 प्रतिशत अंश) और बीपीएम सेवाएं (19.7 प्रतिशत) (चित्र 4) थे। आईटी-बीपीएम क्षेत्र के अंतर्गत 91 बिलियन अमेरिकी डॉलर के राजस्व के साथ आईटी सेवाएं 2018-19 में प्रमुख खण्ड बना रहा। आई टी सेवाओं में से, डिजिटल राजस्व वर्ष-दर-वर्ष 30 प्रतिशत से अधिक वृद्धि के साथ बढ़कर 33 बिलियन अमेरिकी डॉलर पर पहुंच गया।

चित्र 4: वर्ष 2018-19 में आईटी - बीपीएस क्षेत्र का उप-क्षेत्र वार विभाजन

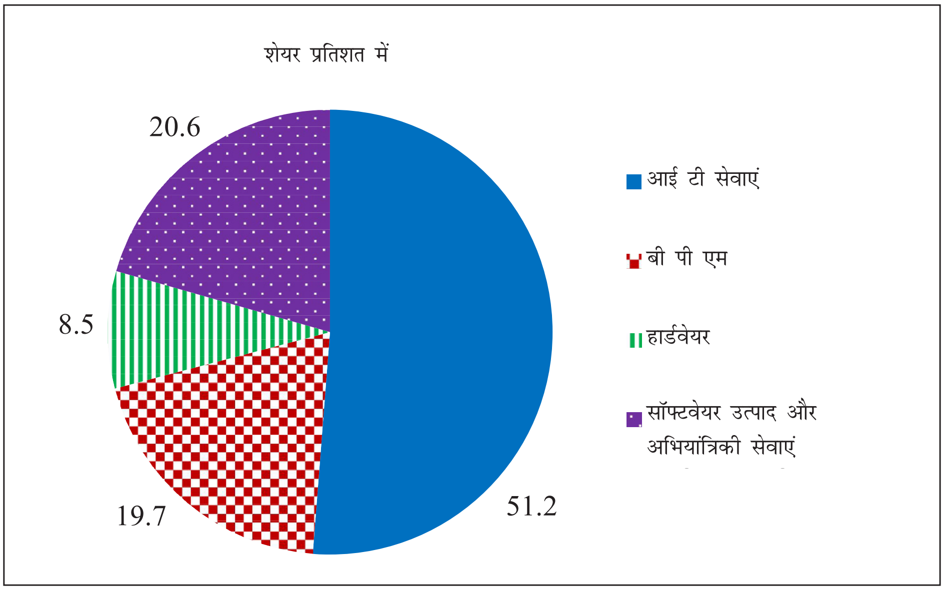

स्रोत: नैसकोम

9.20 आई टी-बी पी एम उद्योग (हार्डवेयर को छोड़कर) के एक महत्वपूर्ण भाग (लगभग 83 प्रतिशत) निर्यात-प्रचालित है। इस निर्यात से 2018-19 में 135 बिलियन यू.एस डॉलर से अधिक का राजस्व प्राप्त हुआ है (तालिका 8)। 2018-19 के दौरान आई टी-बी पी एम क्षेत्र (हार्डवेयर को छोड़कर) की राजस्व वृद्धि 6.8 प्रतिशत (वर्ष दर वर्ष) थी जो कि 2017-18 के 8.2 प्रतिशत के कुछ कम थी। इसके कारण घरेलू राजस्व वृद्धि में 0.3 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) को संकुचन था हालांकि निर्यात राजस्व की (वर्ष-दर-वर्ष) वृद्धि बढ़कर 8.3 प्रतिशत हो गई थी।

9.21 2018-19 में आई टी-बी पी एम क्षेत्र के कुल निर्यात 135.5 बिलियन यू. एस. डॉलर में आई टी सेवाओं का हिस्सा 55 प्रतिशत था और बीपीएम और सॉफ्टवेयर उत्पादों तथा अभियांत्रिकी सेवाओं का हिस्सा 45 प्रतिशत था। जिससे दोनों का व्यक्तिगत हिस्सा लगभग आधा था (चित्र 5)। सभी तीन उप क्षेत्रों में 2018-19 में निर्यात राजस्व बढ़ा है। आई टी सेवाओं में 7.3 प्रतिशत (वर्ष दर वर्ष) बीपीएम सेवाओं में 8.3 प्रतिशत तथा सॉफ्टवेयर उत्पादों एवं अभियांत्रिकी सेवाओं में 11.2 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

तालिका 8: भारतीय आई टी - बीपीएम उद्योग के घरेलू बाजार का आकार एवं निर्यात (हार्डवेयर और ई-कॉमर्स को छोड़कर)

वर्ष	यू एस डॉलर बिलियन में			वृद्धि वर्षानुसार		
	घरेलू	निर्यात	कुल	घरेलू	निर्यात	कुल
2014-15	20.9	97.7	118.6			
2015-16	21.6	107.8	129.4	3.2	10.3	9.1
2016-17	23.8	116.1	139.9	10.4	7.6	8.1
2017-18	26.3	125.1	151.4	10.4	7.8	8.2
2018-19E	26.3	135.5	161.8	-0.3	8.3	6.8

स्रोत: नैसकोम (एन ए एस एस सी ओ एम)
टिप्पणी: E: अनुमान

चित्र 5: आईटीबीपीएम निर्यात का उप-क्षेत्र वार विभाजन (यू एस डॉलर बिलियन में) (हार्डवेयर और ई-कॉमर्स को छोड़कर)

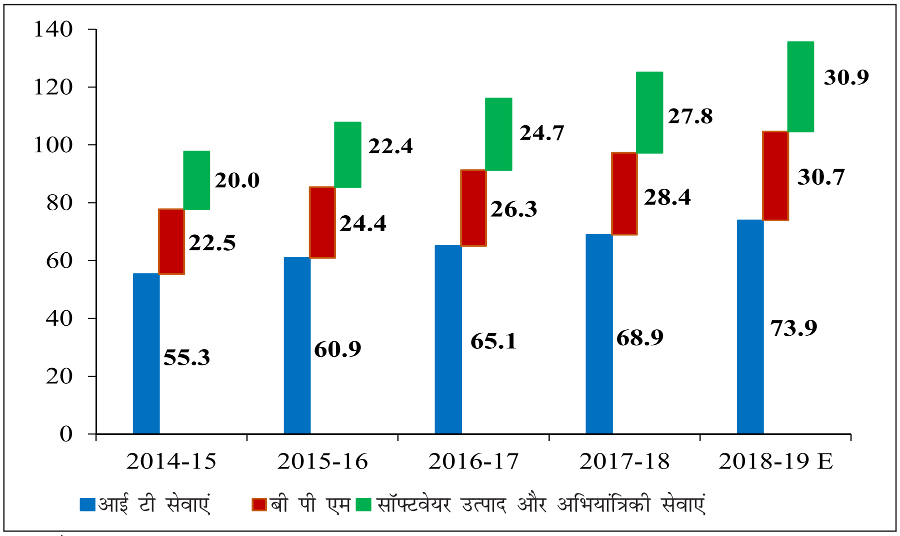

स्रोत: नैसकोम (एन ए एस एस सी ओ एम)
टिप्पणी: E: अनुमान

9.22 गन्तव्यवार निर्यात राजस्व को देखें तो संयुक्त राज्य अमेरिका का अंश निर्यात में काफी अधिक है। 2018-19 में यहां निर्यात 84 बिलियन अमेरिकी डॉलर था जो कि कुल आई टी-बी पी एम निर्यात का (हार्डवेयर को छोड़कर) 62 प्रतिशत है (चित्र 6)। यह यू. के. जो कि 17 प्रतिशत हिस्सदारी के साथ आई टी-बी पी एम सेवा का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है के अंश से काफी अधिक है। यूरोप (यू. के. को छोड़कर) और एशिया प्रशांत का निर्यात से प्राप्त आय में अंश क्रमश: 11.4 प्रतिशत एवं 7.6 प्रतिशत है।

9.23 पिछले 2-3 वर्षों के दौरान आई टी-बी पी एम क्षेत्र में नवाचार और प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए कई नीतिगत कदम उठाए गये हैं, जिसमें स्टार्ट अप इंडिया, राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर उत्पाद नीति और ऐंजेल कर से सम्बन्धित मुद्दों को हटाना शामिल हैं। भारतीय स्टार्ट-अप तंत्र प्रगति करता रहा है, और अब 24 यूनिकॉर्न के साथ दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा बन गया है, हालांकि इसका सबसे बड़े बाजार (चीन: 206) और दूसरे सबसे बड़े बाजार (यू एस ए: 203) से अन्तर काफी अधिक है। बैंगलूर, दिल्ली-एन सी आर ओर मुम्बई का अंश भारत में हो रहे कुल स्टार्ट अप का लगभग 55 प्रतिशत हैं (स्रोत: नैसकोम का अध्ययन स्टडी)।

चित्र 6: भारत के आई टी-बी पी एम निर्यात का भौगोलिक विभाजन (यू एस डॉलर बिलियन में) (हार्डवेयर और ई-कॉमर्स को छोड़कर)

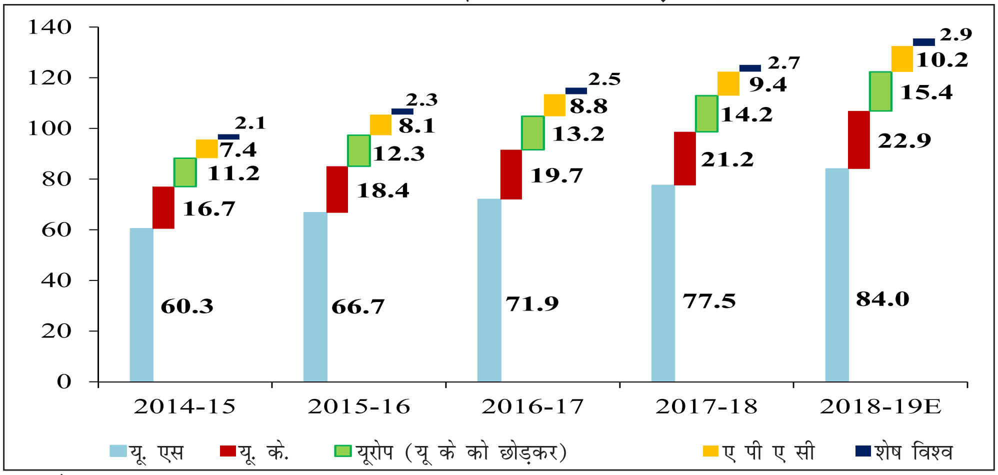

स्रोत: नैसकोम (एन ए एस एस सी ओ एम) टिप्पणी: E: अनुमान।

बंदरगाह और नौपरिवहन सेवाएं

9.24 जनवरी 2019 तक दुनिया के बेड़े में भारत की 0.9 प्रतिशत हिस्सेदारी थी। भारत के पास 13 मुख्य बंदरगाह और लगभग 200 गैर प्रमुख बंदरगाह हैं। भारतीय पत्तनों की कुल कार्गो (मालवाहन) क्षमता मार्च, 2019 के अंत में 1,452.64 मिलियन टन प्रति वर्ष (एम टी पी ए) रही जो कि मार्च 2010 के अंत की 628.03 एम टी पी ए की दोगुनी से भी अधिक थी। पारादीप, चेन्नई, विशाखपत्तनम, दीनदयाल (कण्डला) और जे एन जी टी जैसे पत्तनों के पास मार्च 2019 में उच्चतम कार्गो क्षमता थीं। भारत कम्पनियों के स्वामित्व वाले जहाजों की कुल संख्या 2010 में 1,040 थी जो कि अगस्त 2019 में बढ़कर 1,414 हो गई।

9.25 2013-14 और 2016-17 के बीच कुल बंदरगाह यातायात में वृद्धि देखी गई लेकिन इसमें 2017-18 से गिरावट हो रही है (चित्र 7)। अप्रैल-दिसम्बर 2019 में प्रमुख बंदरगाहों पर हुए यातायात में साल दर साल करीबन 1 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

9.26 जहाजों पर से माल उतारने और लादने की क्रिया से संबंधित समय (जहाज वापसी का समय), जो कि नौपरिवहन क्षेत्र की कुशलता का एक मुख्य संकेतक है, उसमें लगातार गिरावट हुई है, जो कि 2010-11 और 2018-19 के बीच आधा होकर 2.48 दिन रह गया है। जहाजों के टर्नअराउंड टाइम में सभी प्रमुख बंदरगाहों में कमी आई है और अब कोचीन, न्यू मंगलोर, वी. ओ. चिदम्बरनार और चेन्नई बंदरगाहों में सबसे कम तथा कोलकाता बंदरगाह में सबसे अधिक है (तालिका 9)। अंकटाउ (संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, जहाज़ के लिए विश्व के स्तर पर माध्यिका (मीडियन) टर्न अराउंड समय 0.97 दिन हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि

चित्र 7 बंदरगाह यातायात में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

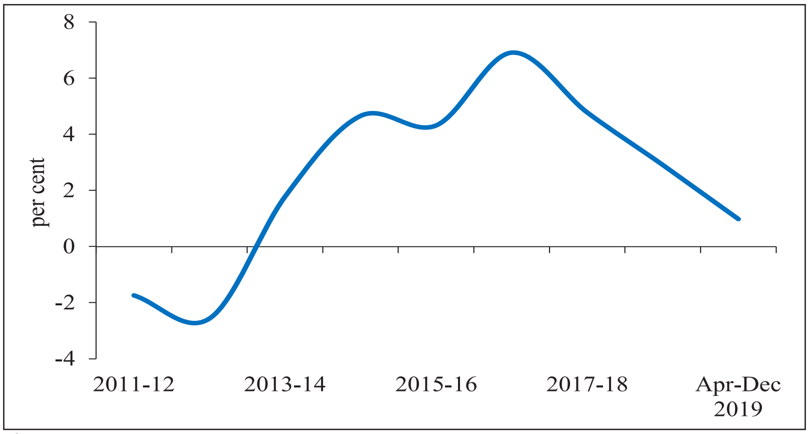

स्रोत: भारतीय बंदरगाह संघ

तालिका 9: भारतीय बंदरगाहों में जहाज़ का औसतन जहाज वापसी का समय (दिनों में)

बंदरगाह का नाम	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
कोलकाता	5.37	4.95	4.49	4.22	4.18	3.98	4.73	4.11	3.84
हल्दिया	4.53	3.66	3.99	3.80	3.37	3.27	3.45	3.76	3.04
पारादीप	7.73	6.33	4.39	4.62	7.01	4.50	4.99	3.31	2.51
विशाखापत्तनम	5.84	5.68	5.39	4.73	5.67	3.84	3.75	2.58	2.51
कमरजार (एन्नोर)	2.78	2.17	2.95	4.24	4.32	6.53	2.70	2.20	1.97
चेन्नई	4.36	3.91	3.24	2.46	2.54	2.53	2.51	2.21	1.98
वी.ओ. चिदम्बरनार	4.11	4.89	4.31	3.92	3.55	3.73	4.40	2.69	1.96
कोचीन	2.20	1.82	1.58	1.76	1.69	2.18	1.99	1.54	1.47
न्यू मंगलोर	2.71	2.95	3.29	3.18	2.46	2.63	2.35	2.04	1.93
मोमुगाव	6.15	4.80	3.93	4.34	4.15	3.65	4.51	2.63	2.63
मुम्बई	4.96	5.22	5.58	5.31	5.28	4.61	3.27	3.72	2.52
जे.एन.पी.टी. (कांड्ला)	2.67	2.46	2.54	2.44	2.24	2.44	2.01	2.24	2.13
दीनदयाल	5.90	6.42	6.40	5.66	5.38	4.66	4.40	2.52	3.01
सभी बंदरगाहे	**4.67**	**4.47**	**4.24**	**3.90**	**4.00**	**3.64**	**3.43**	**2.68**	**2.48**

स्रोत: भारतीय बंदरगाह संघ

भारत में बंदरगाहों की दक्षता में और सुधार करने की गुंजाइश है।

अंतरिक्ष क्षेत्र

9.27 भारत के अन्तरिक्ष कार्यक्रम में पाँच दशक पहले धीमी शुरूआत के बाद से चरधातांकीय रूप से वृद्धि हुई हैं। 1960 के दशक में जहाँ यह सरल मानचित्रण सेवाएँ प्रदान करता था, वर्तमान में इसके कई और उपयोग हैं। इसमें कई प्रक्षेपण यान और संबंधित प्रौद्योगिकी की बनावट और विकास, पृथ्वी के अवलोकन के लिए उपग्रह और संबंधित प्रौद्योगिकी, दूरसंचार और ब्रॉडबैंड, पथ प्रदर्शन (नेविगेशन), मौसम विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान में आर एंड डी (शोध एवं विकास) और अभी हाल ही में ग्रहों की खोज शामिल हैं।

9.28 भारत ने 2018 में अंतरिक्ष कार्यक्रम पर लगभग 1.5 बिलियन अमेरिकी डालर खर्च किए है। तथापि, भारत सरकार का अंतरिक्ष खर्च अभी भी अंतरिक्ष क्षेत्र के प्रमुख खिलाड़ियों जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका, से पीछे है, जिसने 2018 में अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की अपेक्षा लगभग 13 गुना अधिक खर्च किया था (तालिका 10)। चीन, जो हाल ही के वर्षों में अंतरिक्ष

तालिका 10: 2018 में अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए सरकार का बजट

देश	खर्च (बिलियन अमेरिकी डालर)
यू.एस.ए. (नासा)	19.5
चीन (सी.एन.एस.ए.)	11.0
रूस (रोस्कोमोस)	3.3
भारत (इसरो)	**1.5**

स्रोत: इसरो (जिसने स्टटिस्टा से लिया है)।

क्षेत्र का एक प्रमुख खिलाड़ी बन चुका है, ने भी 2018 में भारत की अपेक्षा लगभग सात गुना अधिक खर्च किया था।

9.29 2017 की एक असफलता को छोड़कर, भारत ने बिना असफल हुए हाल ही के वर्षों में प्रतिवर्ष लगभग 5-7 उपग्रहों का प्रक्षेपण किया है। दूसरी तरफ, रूस,यू. एस.ए. और चीन का वर्ष 2018 में क्रमशः 20, 31 और 39 उपग्रहों के साथ उपग्रह प्रक्षेपण सेवाओं में प्रमुख स्थान बना हुआ है (तालिका 11)।

9.30 अंतरिक्ष कार्यक्रम में शामिल प्रमुख क्षेत्रों में प्रथम क्षेत्र उपग्रह संचार है। इनसैट/जीसैट तंत्र दूरसंचार प्रसारण व उपग्रह आधारित ब्रॉडबैंड अवसंरचना की रीढ़ है। दूसरा प्रमुख क्षेत्र पृथ्वी प्रेक्षण तथा अन्तरिक्ष आधारित सूचनाओं की सहायता से प्रशासन हैं। मौसम पूर्वानुमान, आपदा प्रबंधन, और राष्ट्रीय संसाधनों की मैपिंग तथा इसका तीसरा प्रमुख क्षेत्र उपग्रह की सहायता से पथप्रदर्शन (नेविगेशन) हैं जिसमें गगन व नैव आईसी शामिल है। इसरो और भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (ए ए आई) की संयुक्त परियोजना गगन ने नागर विमानन के संबंध में सटीकता और समग्रता में सुधार तथा भारतीय वायुसीमा में बेहतर वायु यातायात प्रबंधन हेतु इस क्षेत्र में जीपीएस कवरेज को संवर्धित किया है। नैव आईसी, जो कि एक क्षेत्रीय पथ प्रदर्शन प्रणाली है, की भी स्थापना स्थिति, पथ-प्रदर्शन व समय (पीएनटी) सेवाएं प्रदान करने हेतु की गई है।

तालिका 11: देश के द्वारा प्रक्षेपित उपग्रहों की संख्या

देश	2013	2014	2015	2016	2017	2018
यू एस ए	19(0)	23(1)	20(2)	22(0)	29(0)	31(0)
रूप	34(2)	37(3)	29(3)	19(1)	20(1)	20(1)
चीन	15(1)	16(0)	19(0)	22(2)	18(2)	39(1)
यूरोपी अंतरिक्ष एजेंसी	6(0)	7(0)	9(0)	9(0)	9(0)	8(1)
भारत	**3(0)**	**4(0)**	**5(0)**	**7(0)**	**5(1)**	**7(0)**
जापान	3(0)	4(0)	4(0)	4(0)	7(1)	6(0)
अन्य	1(0)	1(0)	3(0)	2(0)	2(1)	3(0)
कुल	**81(3)**	**92(4)**	**86(5)**	**85(3)**	**90(6)**	**114(3)**

स्रोतः इसरो
नोटः कोष्ठक में दी गई संख्या उपग्रह प्रक्षेपण में असफलताओं को दर्शाती है।

9.31 वैश्विक रूप मे, हालिया वर्षों में अंतरिक्ष कार्यकलाप खिलाड़ियों एवं अनुप्रयोगों के संबंध में जबरदस्त परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है। इसको विशेषता अंतरिक्ष कार्यकलाप के अनुबंध में बदलाव अन्तरिक्ष रही जिसमें अन्वेषण व राष्ट्रीय हित के कार्य करती हुई सरकारी एजेंसियों के स्थान पर आक्रामक रूप से व्यावसायिक हितों को पूरा करती हुई गैर सरकारी निजी क्षेत्र की एजेंसियां आ रही हैं। अधिकांश देशों द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा उद्देश्यों के लिए भी अंतरिक्ष प्रणाली का सक्रिय रूप से उपयोग किया जा रहा हैं। वर्ष 2018 में वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था 360 बिलियन अमेरिकी डालर के बराबर थी, जिसमें अंतरिक्ष प्रणाली विनिर्माण तथा अंतरिक्ष आधारित सेवाएं शामिल हैं।

9.32 इसरो अंतरिक्ष संबंधी वस्तुओं और सेवाओं की प्रदायगी में भारतीय उद्योगों को शामिल करने की नीति का अनुसरण करता रहा है विशेषकर उपग्रहों व प्रक्षेपण यान मिशनों तथा अनुप्रयोग कार्यक्रमों की

बढ़ती संख्या के मद्देनजर है। इस दिशा में, अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी निवेश को आकर्षित करने हेतु निम्नलिखित क्षेत्रों की पहचान की गई है: (i) ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी); (ii) सैटेलाइट इंटीग्रेशन एंड एसेंबली; (iii) सम्मिश्र पदार्थो का उत्पादन; (iv) ठोस, द्रव, प्रशीतनी (कायोजेनिक) तथा उप-प्रशीतनी (सेमी-कायोजेनिक) प्रणोदकों का उत्पादन; तथा (v) वैमानिकी और उपग्रह उप-प्रणालियों के लिए इलेक्ट्रानिक पैकेज का उत्पादन, परीक्षण एवं मूल्यांकन।

अध्याय एक दृष्टि में

- भारत की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की महत्ता लगातार बढ़ रही है तथा सकल संवर्द्धन मूल्य और सकल संवर्द्धन मूल्य वृद्धि में इसका हिस्सा 55 प्रतिशत हैं एवं भारत के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अंतर्वाह में दो-तिहाई और कुल निर्यात में 38 प्रतिशत है।
- सेवा क्षेत्र का योगदान अब 33 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से 15 राज्यों में 50 प्रतिशत से अधिक है।
- सेवा क्षेत्र के सकल मूल्य संवर्द्धन की वृद्धि 2019-20 में कम हुई है।
- विभिन्न उच्च-आवृत्ति संकेतकों और क्षेत्रवार आंकड़ों जैसे वायु यात्री यातायात, रेल माल यातायात, बन्दरगाहों यातयात, बैंक ऋण तथा विदेशी पर्यटक आगमन 2019-20 के दौरान सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में वृद्धि कमी की और संकेत करते है।
- अप्रैल-सितम्बर 2019 में सेवा क्षेत्र में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अंतर्वाह में मजबूत बेहतरी देखी गई है और सेवा क्षेत्र के निर्यात ने अपनी गति बनाई रखी है।
- हाल के वर्षों में सेवाओं के निर्यातों का निष्पादन वस्तुओं के निष्पादन से बेहतर रहा है, जिसके कारण विश्व के वाणिज्यिक सेवा निर्यातों में भारत का अंश पिछले दशक में लगातार बढ़ते हुए 2018 में 3.5 प्रतिशत पर पहुंच गया, जो कि वस्तुओं के निर्यातों में भारत के 1.7 प्रतिशत से दुगुना है।
- जहाज वापसी का समय 2010-2011 में 4.67 दिनों से लगभग आधा होकर 2018-19 में 2.48 दिन हो गया हैं। तथापि यह अभी भी वैश्विक मंझला के दुगने से अधिक है।
- भारत ने हाल के वर्षों में, लगभग 5-7 उपग्रह प्रतिवर्ष छोड़े हें, जिसमें 2017 में हुई एक असफलता को छोड़कर अन्य कोई असफलता नहीं रही है।